ग्रामीण विकास ट्रस्ट - झाबुआ

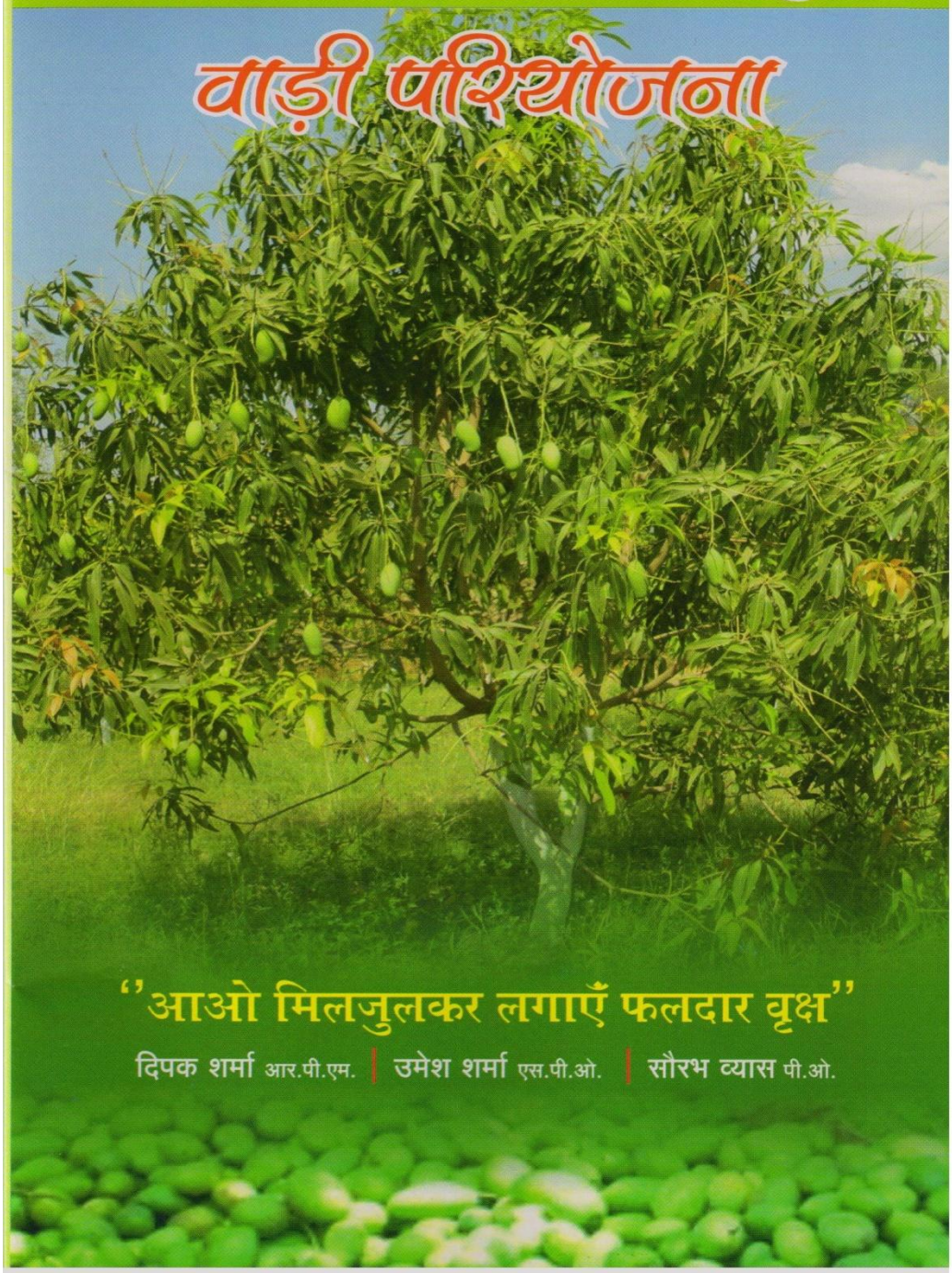

वाड़ी परियोजना

"आओ मिलजुलकर लगाएँ फलदार वृक्ष"

दिपक शर्मा आर.पी.एम. | उमेश शर्मा एस.पी.ओ. | सौरभ व्यास पी.ओ.

आओ मिलजुलकर लगाएँ फलदार वृक्ष

वृक्ष लगाए ओर आने वाले कल को बचाए ओर अपनी आमदनी बढाए

मानव समाज का पेड पौधो से गहरा संबंध रहा है बदलते परिवेश मे यह संबंध टूट रहा है ओर आज मानव अपनी खुशीहाली के लिए पर्यावरण से खिलवाड कर रहा है ओर वृक्षो को खत्म कर हरियाली विहीन धरती को करते जा रहे है तो आज अब समय आ गया है फलदार वृक्ष लगाए ओर आने वाले कल को बचाने के साथ अपनी आजिवीका के साधनों को बढाए फलदार वृक्ष लगाकर धरती को हरियाली की चूनर पहनाते हुए अतिरीक्त आमदनी कमाए ! इस तरह से फलदार वृक्षों को लगाने को वाडी कहा जाता है इस विधी को अपनाने से चार से पॉच वर्श मे फल लगना प्रारंभ हो जाते है ग्रामीण विकास ट्रस्ट नार्बाड बैंक के सहयोग से झाबुआ , मेघनगर एवं रामा विकासखण्डों के ग्रामो मे आदिवासी किसान भाइयों के साथ इस दिशा मे पहल कर चुका है ।

नियोजन – अच्छे परिणाम के लिए कार्य योजना बनाकर फलदार वृक्ष (वाडी) लगाना चाहिए ! यहॉ एवं सामान्य योजना प्रस्तुत की जा रही है ।

जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टुम्बर	नवम्बर	दिसम्बर
गतिविधि सह आर्थिक नियोजन	रेखांकन	गढढा खुदाई	गढढे का सोर्यवरण/ धुप उपचार आदान सामग्री व्यवस्था	गढढे का सोर्य वरण/ धुप उपचार आदान सामग्री व्यवस्था	गढकों की भराई /पौध क्रय	पौध रोपण	निंदाई गुडाई	गेप फिलींग वाडी सफाई	निंदाई –गुडाई/ रोगग्रस्त शाखाओं की कांट छांट	निंदाई –गुडाई/ रोगग्रस्त शाखाओं की कांट छांट	निंदाई –गुडाई/ रोगग्रस्त शाखाओं की कांट छांट

मिट्टी का चुनाव :– फलदार वृक्ष लगाने के लिये सबसे अच्छी मिटटी लाल, भुर – भुरी हल्की रेतीली होना चाहिए । किसी स्थान पर मिटटी फलदार पौधो के अनुकूल है या नही इसकी पहचान एक छोटी सी जॉच करके कर सकते है इसके लिए पौधरोपण वाले स्थान पर एक छोटा सा गडडा खोदा जाता है और गडडे से निकली मिटटी में पानी मिलाकर हाथ से गेंद बना ली जाती है ओर उसे हवा में फेंका जाता है

हवा मे फेंकने के पश्चात दो स्थितियॉ निर्मित होती है पहली से गेंद हवा में पहुँचते ही टुटकर बिखर जाती है या वह वैसे ही निचे आ जाती है ऐसी स्थिती में बगिया वाडी के लिऐ उपयुक्त मिटटी पहले प्रकार की है पौध रापण के लिऐ ऐसी भूमी का चयन करना चाहिए जिसमें फलदार वृक्षों की अच्छी बढवार हो सके ।

पौधों के बीच की दूरी :– दो पौधो के बीच की दूरी भूमी के उपजाऊपन पर निर्भर करती है उपजाऊ भूमी पौधो की जडे ओर टहनियों मे अधिक वृद्धि होती है इसके लिये इन्हें अधिक स्थान की आवश्यकता पडती है ऐसी स्थिति में पौधो के बीच की दूरी निर्धारित रखना चाहिए ताकि पौधो की बढवार सुचारू रूप से हो सके । साथ ही पौधो बीच की दूरी में अंतरवर्तीय फसलें ली जा सकती है जिससे फलदार पौधो से आय प्राप्त नहीं होती तब तक अंतरवर्तीय फसलो से अतिरिक्त आय प्राप्त कर सकते हैं अंतरवर्तीय फसलो के रूप मे सब्जीवर्गीय फसलो से अधिक आर्थिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है

वाडी में लगने वाले पौधो के नाम और उनके बीच की दूरी इस प्रकार है ।

क.	पौधो के नाम	पौधो से पौधे की दुरी	गढढे की गहराई (गढढे का आकार)
1.	आम	10 मी.×10मी.	1 मी.×1मी.×1मी.
2.	चीकु	10 मी.×10मी.	1 मी.×1मी.×1मी.
3.	अमरूद	06 मी.×06मी.	0.6 मी.×0.6मी.×0.6मी.
4.	अनार	06 मी.×06मी.	0.6 मी.×0.6मी.×0.6मी.

ले–आउट :– वाडी सामान्य 1 एकङ क्षेत्रफल मे लगाई जाती है । उबङ – खाबङ पथरीले क्षेत्रों में रेखांकन करने से पहले वाडी का नक्शा कागज पर बनाकर उसमें वाडी में लगने वाले पौधो को अंकित किया जाता है । फिर उसी के अनुसार पौधों के लिये निशान , खूंटी खेत में लगाई जाती है सबसे पहले खूंटी लगाने के लिये 1 फीट की लकडी लेकर उसके एक सिरे को थोडा सा नुकीला कर दिया जाता है । ताकि वह जमीन में आसानी से लग सके।
पौधो के रोपण स्थल चिन्हित करने के लिये एक लम्बी रस्सी का उपयोग किया जाता है । उदाहरण के लिये यदि वाडी मे आम (10 मी.×10) मी. और चिकू (10 मी.×10 मी.) लगाना है तो रस्सी के हर 10 मीटर पर लाल रंग के कपडे की पटटी बांधे और हर 10 मीटर पर पीले रंग के कपडे की पटटी बांधे इस प्रकार लाल पटटी आम का स्थल ओर पिली पटटी चीकू का रेखांकन दर्शाती है। उसी प्रकार अमरूद (6मी.×6मी.) एवं अनार (6मी.×6मी.) पर लगाना है तो रस्सी के हर 6 मीटर की दूरी पर लाल कपडे की पटटी बांधे ओर 6मीटर की दूरी पर पीले कपडे की पटटी बांधे इस प्रकार 6 मीटर की दूरी पर लाल कपडे की पटटी अमरूद एवं पीला पटटी अनार के रेखांकन दर्शाएगी । दो व्यक्ति साथ मिलकर ले –आउट डालने का कार्य करते है । वाडी ले –आउट डालते समय बाउन्ड्री के चारों ओर दो मीटर छोडकर ले –आउट डाला जाता है । जब रस्सी की सहायता से पौधे से पौधे की दूरी जो उपरोक्तानुसार बताई गई है । उस पर निशान लगाकर खूंटी लगा दी जाती है । ग्रामीण विकास ट्रस्ट, नाबार्ड के सहयोग से एक एकङ मे 53 पौधे लगा रहे है जिसमे 43 आम 10 चिकू के पौधे लगवाऐं है ।

गढढों की खुदाई :– पौधों की प्रजाति के अनुसार ऊपर बताई गई गहराई के गढढे खोदने चाहिए । गढढों को साधारणतया मार्च महिने मे खोदना चाहिए ताकि अप्रैल–मई की कडी धुप में सुखने पर मिटटी कीटाणु रहित हो जाए । जब हम 1मीटर का गडडा खोदते है ता प्रत्येक फुट की गहराई पर अलग –अलग प्रकार की मिटटी मिलती है इसलिये प्रत्येक फुट की खुदाई से मिली मिटटी को अलग –अलग ढेर बनाकर रखा जाता है ताकि इनकी पहचान बनी रहे । विशेषकर सबसे ऊपर की 1) फुट की मिटटी मे लकडी की खूंटी लगाते है ताकि आसानी से पहचान हो सके । गढढा समान रूप से 3 फीट की गहराई का हो इसको सुनिश्चित करने के लिये तीन फीट लम्बा बांस / लकडी की सहायता ली जा सकती है । गढढा खोदने का सबसे अच्छा समय फरवरी –मार्च है गढढा खुदाई के समय ऊपरी 1) फीट की ऊपजाई मिटटी गढढे के ढाल के ऊपरी भाग मे डालना चाहिये तथा निचे की 1) फुट की मिटटी को थाला बनाने के काम मे ले लेना चाहिये ताकि यदि अचानक वर्षा हो जाए तो वह मिट्टी बहकर गढढे मे ही आ जाये ।

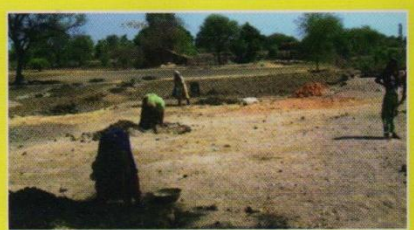

गढ्ढे की भराई :– गढ्ढों को अच्छी तरह से धुप लग जाने के बाद गढ्ढों की भराई की जाती है । इस प्रकिया में सबसे पहले जंगल /बडे वृक्षों की सूखी पत्तियो को छः से नौ इंच एक परत के रूप मे गढ्ढे मे पतली परत के रूप मे बिछा दिया जाता है । इसके बाद खुदाई के दौरान निकली पहली परत की मिट्टी को भरा जाता है दुसरी परत की मिट्टी मे वर्मी कम्पोस्ट नीम खली , करंज की खली , हड्डी का चुरा ,राक फास्फेट को अच्छी तरह से मिलाकर गढ्ढों में डाला जाता है । सबसे ऊपर की भराई मे वर्मी कम्पोस्ट एवं गोबर खाद भरते है और आस–पास की मिट्टी को अच्छी तरह से मिलाकर गढ्ढे मे भरकर उसके मध्य में खंटी लगा दी जाती है ।

पौध रोपण :– पौधों का रोपण वर्षा ऋतु (जुलाई) मे करना चाहिये । पौध रोपण के लिये उचित समय सायंकाल होता है । पौध रोपण के लिये दो बार अच्छी वर्षा की आवश्यकता होती है । पौध रोपण के ऐसे पौध जिनकी आयु एक से दो वर्षा व ऊँचाई दो से तीन फीट हो उसका चयन करना चाहिये । नर्सरी से पौध क्रय करने के पश्चात उसे पोलिथीन के निचे से पकडना चाहिये न कि तने से उठाना चाहिये । पौधों को सावधानी पूर्वक अलग – अलग गढ्ढे मे एक फीट की गहराई पर खोदकर लगा दिया जाता हैं पोलिथीन अलग करते समय देखना चाहिये की पौधें की जड न टूटे और पौधा लगाने के बाद उसके आस–पास की मिट्टी को अच्छी तरह से दबा दिया जाता है । पौध रोपण के बाद प्रत्येक पौधे के चारों–ओर थाले बनाकर सिंचाई करना चाहिये जिससे गढ्ढे की सारी मिट्टी गली हो जाये । यदि पौध रोपण के समय बरसात हो रही हो तो सिंचाई की आवश्यकता नही है। थाले बनाते समय वर्षा के पानी के निकास का प्रबंध भी रखना चाहिये क्योंकि पौधे चारों ओर पानी के एकत्र होने से पौधे मर सकते है । पौध रोपण के समय विशेष सावधानी के रूप मे इस बात का ख्याल रखें की पौधे का जुडाव वाला हिस्सा जहॉ से वह ग्राफ्ट या कलम कटा है वह हमेशा गढ्ढे के ऊपर रहे अर्थात वह मिट्टी में ना दब पाये साथ ही थाले मे में पानी इतना भी ना भरे की वह हिस्सा पानी में डुबे ।

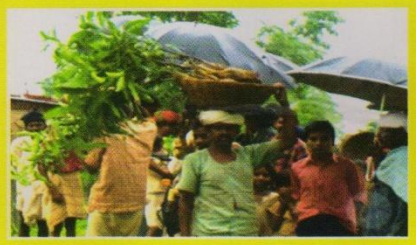

सिंचाई :– प्रारंभिक एक वर्ष तक समय–समय पर सिंचाई करते रहना चाहिये । इस पत्रक मे कम पानी वाले क्षेत्रों में सिंचाई की विधी बताई जा है जिसका उपयोग विशेषकर गर्मी के दिनों में किया जाए । गढ्ढे के पास जहॉ पौधा लगाया है । उससे 1 फीट दुरी पर 1•5 फीट ऊचाई के तीन पी.वी.सी. पाईप के टुकडे या मिट्टी के गमले जो विशेषकर वाडी पौधों को पानी देने के लिये लगाए जाए। तीन पी.वी.सी. पाईप के टुकडे लेकर पौधे थाले में आपस में तीन–तीन फीट की दुरी पर दो पाईपों को एक सीध मे व एक पाईप सामने की तरफ लगाकर गढ्ढा भर दिया जाता है साथ ही

मिट्टी के गमले को भी इसी प्रकार लगाएं पाईप मे रेत, बजरी व छोटे आकर के कंकर भर दिये जाते है । जब पौधों को पानी की आवश्यकता होती है ऐसी स्थिति में पानी पाईपों या गमलों में डाला जाता है इस विधी के उपयोग से वाश्पोत्सर्जन प्रकिया द्वारा नुकसान नही होता है क्योंकि पूरा पानी नीचे जमीन मे पौधों की जडों तक चला जाता है । गर्मीयों मे पानी की कम उपलब्धता हाने पर इस विधी का उपयोग करने से पौधों को आवश्यकतानुसार पानी मिलता रहता है वाष्पोत्सर्जन किया कम–कम करने के लिये पौधों के थालों मे निराई–गुडाई एवं मल्चिंग का कार्य करे मल्चिंग के लिये छोटै–छोटे पत्थरों या घास का उपयोग करे जिसमे पानी की बचत हो ।

देखभाल :– स्टेकिंग (सहारा) पौध रोपण के बाद पौधों की सीधी बढवार के लिए सहारे की जरूरत होती है यह सहारा तीन लकडीयों के द्वारा अंग्रेजी H अक्षर की तरह दिया जाता है इस कार्य के लिये पौधे से दो दिशाओं मे आधा मीटर की दुरी पर एक–एक मीटर ऊचाई की लकडी गाड दी जाती है जिससे मध्य मे पौधे को बांधते हुए एक लकडी आडी लगाई जाती है ध्यान रहे दोनो को थाले के बाहर लगाया जाए ताकि दिमक के प्रकोप से पौधो का बचाया जा सके एवं दिमक के आकमण का पता इन लकडीयो के द्वारा पता चल सके जिससे दिमक के प्रकोप की रोकथाम या बचाव के उपाय किये जा सके। बरसात के मौसम के बाद समय रहते हुए शीत / ठंड के मौसम मे पौधों को पाले से बचाना भी पडता है इसके लिये वाडी धारक अपने खेत मे उपलब्ध क्षैत्रीय सामग्री से ही चटाई बचा पौधो से तीन फीट की दुरी पर बांस की लकडी लगाकर उस पर चटाई लगा दें इस चटाई से पौधों की ठंड में पाले से व गर्मी के मौसम मे धूप से बचाव होता है ।

अन्य आवष्यक कार्य

निदाई– गुडाई :– पौधों के आस–पास उगने वाली खरपतवार घास,फुस को समय – समय पर निकालते रहना चाहिए ताकि पौधों की बढवार प्रभावित न हो , गर्मी के मौसम मे पौधे थाले मे घास फुस बिछा हो । इस गतिविधी से दो लाभ होंगे ,पहला नमी, घास नही , दूसरा घास – फुस के सडने से ह्युमस का निर्माण होगा जिससे पौधों की बढवार में सहयो प्रदान करेंगे ।

बागड :– वाडी लगाने से पहले सबसे महत्वपूर्ण कार्य बागड का है ताकि पौधो की सुरक्षा के लिये बागड का कार्य अत्यंत आवश्यक है पौधें की सुरक्षा जंगली जानवरों, पालतु जानवरों से हो सके जिससे वाडी में लगने वाले पौधों को कोई नुकसान न हो तथा हमारी वाडी सफलतम् संचालित हो सके । बागड के लिये स्थानिय रूप उपलब्ध संसाधनों द्वारा तैयार करें क्योंकि इसका मुख्य उद्देश्य केवल पौधों की सुरक्षा है ।

" आओ हम मिलजुलकर वाडी लगाए
खुषहाली की राह मे अपना कदम बढाए "

साभार :– ग्रामीण विकास ट्रस्ट, झाबुआ (म.प्र.)
वाडी परियोजना (आदिवासी विकास निधीअंर्तगत)
सहयोगकर्ता :– नाबार्ड ,भोपाल (म.प्र.)

chetan arts, Jhabua 9589625011